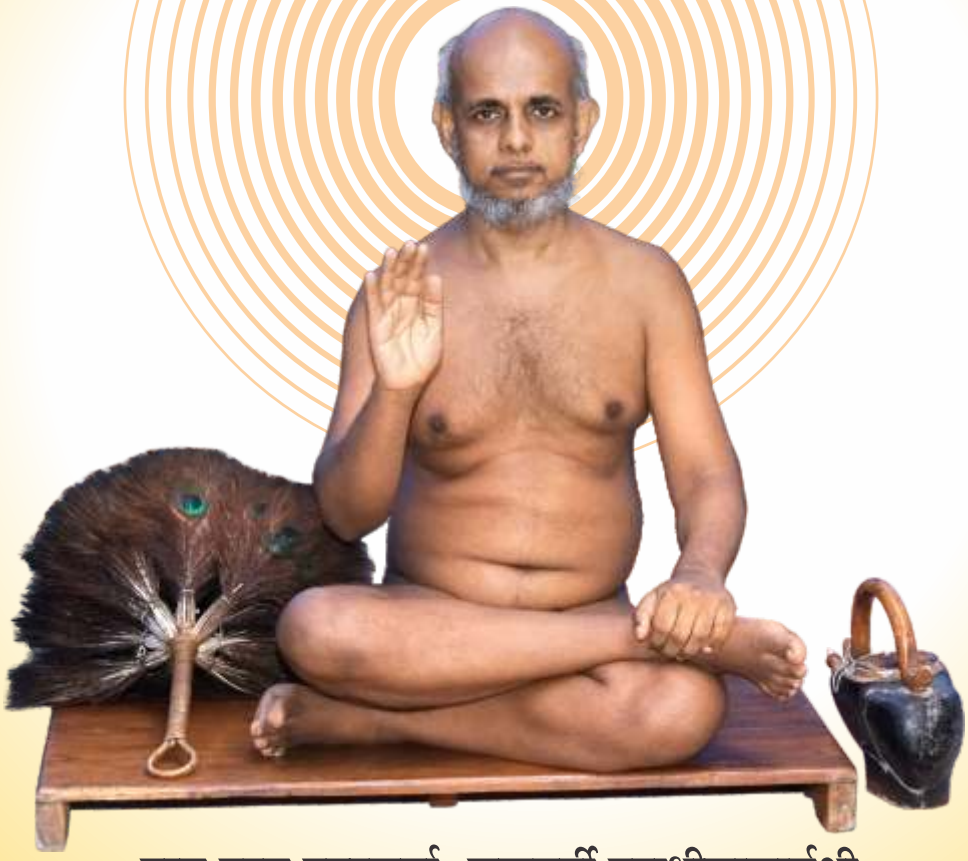

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

श्री नमिनाथ तीर्थंकर विधान

रचयित्री : पूज्या गणिनी आर्यिकाश्री ज्ञानमती माताजी

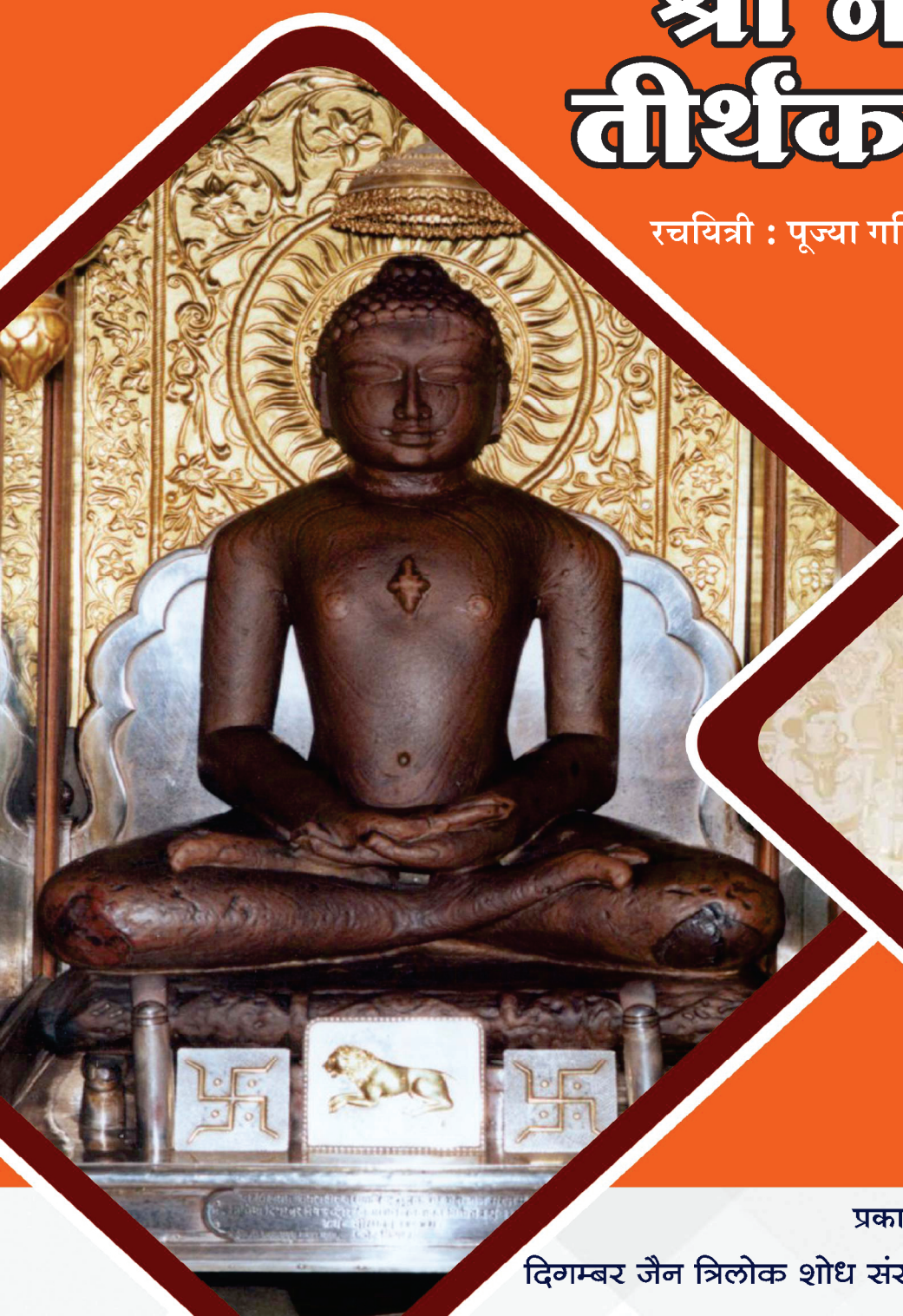

प्रकाशक:

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर-मेरठ (उत्तरप्रदेश)

(परम्परानायक)

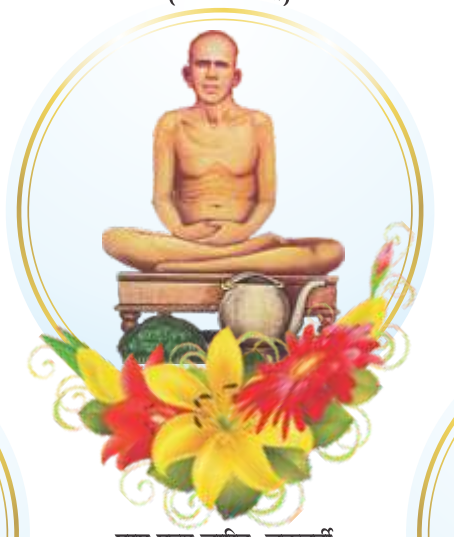

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं.483
ISBN-978-93-84003-93-7

श्री नमिनाथ तीर्थंकर विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

ऋषभगिरि मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में विराजमान 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव प्रतिमा निर्माण की प्रेरणास्रोत दिव्यशक्ति, चारित्रचन्द्रिका परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के 61वें आर्यिका दीक्षा दिवस-वैशाख वदी दूज (24 अप्रैल 2016) के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com, rk195057@yahoo.com
Website : www.jambudweep.org , www.encyclopediaofjainism.com
Facebook : divyashaktigyanmatimataji

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2542	मूल्य
1100 प्रतियाँ	वैशाख वदी दूज, (24 अप्रैल 2016)	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादकः–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

ॐ नमो मंगलं कुर्यात्, ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

वर्तमान में सभी मनुष्यों का जीवन मंगलमयी हो, इसके लिए देवदर्शन, भगवान का अभिषेक, पूजन, भगवान की भक्ति, मण्डल विधानों का आयोजन मंगल साधन हैं। जिनेन्द्र देव की भक्ति, स्तुति कर्मनिर्जरा में विशेष कारण है। भक्त भगवान की भक्ति करते-करते एक दिन स्वयं भगवान बन जाता है। पूज्य माताजी हमेशा अपने प्रवचनों में कहती हैं प्रत्येक प्राणी की आत्मा भगवान आत्मा है। जैसे दूध में घी विद्यमान है वैसे ही प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर, आर्यिका ज्ञानमती नाम को पाकर, पूरे विश्व में ज्ञान का अलख जगाने वाली पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य क्षेत्र में एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

वर्तमान समय में देखते हैं कि जब हर संसारी प्राणी दिन-रात अपने सांसारिक सुख साधनों को प्राप्त करने के लिय तन-मन से पूर्णरूपेण धनवृद्धि के लिये प्रयासरत रहता है। वहाँ उनके पास कुछ समय भी धर्म कार्यों के लिये शेष नहीं है। हर समय भोगोपभोग की सामग्री को एकत्र करने में ही उनका ध्यान रहता है। कई जन्मों के पुण्य उदय से ही मनुष्य का जिनधर्म एवं जिनवाणी के प्रति अनुराग उत्पन्न होता है। जीव के शुभ-अशुभ भाव ही उसे तदनुसार फल देने वाले होते हैं। श्रावकों के लिये षट् आवश्यक कर्तव्यों में देवपूजा, स्वाध्याय आदि भी कहे गये हैं। जिनमें अनेक पूजा-विधानों को करके भगवान की भक्ति करने का अवसर मिल जाता है और फिर गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के द्वारा लिखी पूजाओं को करने से तो "एक पंथ दो काज" वाली सूक्ति चरितार्थ हो जाती है यानि भक्ति के साथ-साथ स्वाध्याय भी हो जाता है। अनेक छोटे बड़े विधान पू. माताजी की लेखनी से प्रसूत हो चुके हैं और निरंतर यह क्रम जारी है। उसी क्रम में **"श्री नमिनाथ तीर्थंकर विधान"** नामक यह पुस्तक भी ग्रंथमाला के माध्यम से प्रकाशित होकर आप तक पहुँच रही है। यह विधान आप सबके लिये मंगल प्रदान करने वाला हो, यही मंगल भावना है।

प्रस्तावना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

देवेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रवंद्यं, श्रीदेवदेवं नमिनामधेयं।
भक्त्या प्रवंदे त्रयशुद्धितस्त्वां, मनः समाधिं, विदधातु देव।।

जैनधर्म के 21वें तीर्थंकर श्री नमिनाथ भगवान हुए हैं। भगवान श्री नमिनाथ ने मिथिलापुरी में पिता विजय-माता वप्पिला देवी के महल में आषाढ़ वदी दशमी को जन्म लिया। इसी तिथि में भगवान ने दीक्षा धारण की। भगवान को केवलज्ञान मगसिर सुदी ग्यारस को हुआ, समवसरण की रचना बनी, भगवान की दिव्यध्वनि से असंख्यात प्राणियों ने धर्मलाभ प्राप्त किया। भगवान की ऊँचाई साठ हाथ, वर्ण स्वर्ण सदृश, आयु दस हजार वर्ष की थी। भगवान नमिनाथ ने वैशाख वदी चौदस के दिन शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र से मोक्षधाम को प्राप्त किया अर्थात् सिद्धशिला पर विराजमान होकर अनन्त सुख को प्राप्त कर लिया। पंचकल्याणक से सहित तीर्थंकर श्री नमिनाथ का यह विधान है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, दिव्यशक्ति, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 24 तीर्थंकरों की भक्ति, गुणगान आदि करते हुए उनकी स्तुति, विधान आदि रचकर जैन समाज पर महान उपकार किया है। 34 अतिशयों, 8 प्रातिहार्य और चार अनन्त चतुष्टय से सहित भगवान नमिनाथ का विधान भी अतिशयकारी है।

इस विधान में सर्वप्रथम मंगलाचरण करते हुए श्री नमिनाथ स्तोत्र है जिसमें भगवान का संक्षिप्त परिचय गागर में सागर के सामन समाहित है। श्री नमिनाथ स्तोत्र के बाद श्री अर्हंत पूजा है फिर श्री नमिनाथ तीर्थंकर की पूजा एवं पंचकल्याणक के अर्घ्य हैं। इसके बाद भगवान के 1008 नाम मंत्रों में से 108 मंत्रों को लेकर 108 अर्घ्य हैं।

जैसे–

महामुनि प्रभु आप, मुनियों में उत्तम कहे।
श्री नमि जिन तुम पाद, पूजत ही सुखसंपदा।।

ॐ ह्रीं महामुनये श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निवपामीति स्वाहा।

भगवान के 1008 नाम का जो प्रतिदिन पाठ करते हैं उनकी विद्या, बुद्धि, क्षयोपशम आदि अवश्य बढ़ जाते हैं। पूजा विधान के मध्यम से भगवान की भक्ति करते हुए भव्यजीव अपने कर्मों को निर्जीर्ण कर लेते हैं। 108 अर्घ्य के बाद में 1

पूर्णार्घ्य, जाप्यमंत्र एवं जयमाला है। जयमाला में पूज्य माताजी ने भगवान के समवसरण की महिमा का सुन्दर वर्णन किया है–पृथ्वी से बीस हजार हाथ ऊपर जाकर नीलमणि की शिला पर समवसरण की रचना होती है उसमें पंचवर्ण रत्नों का सुन्दर धूलिसाल परकोटा होता है, चारों दिशाओं में चार मानस्तंभ होते हैं जिनके दर्शन से मानी का मान गलित हो जाता है। चारों दिशाओं में चार बावड़िया होती हैं, जिनमें स्नान करने से 7 भव दिख जाते हैं। समवसरण में चैत्यप्रासाद भूमि, खाई भूमि, लता भूमि, वनभूमि, कल्पभूमि, धवजाभूमि, श्रीमण्डपभूमि ऐसी 7 भूमियाँ हैं। सातवीं श्रीमण्डपभूमि में बारह कोठे होते हैं–जिनमें मुनिगण, सुरनर, पशुगण आदि सभी भगवान की दिव्यध्वनि का पान करते हैं।

भगवान के समवसरण में सुप्रभमुनि आदि 17 गणधर, 20 हजार मुनि, गणिनी आर्यिका मंगिनी माता सहित 45 हजार आर्यिकायें, 1 लाख श्रावक व 3 लाख श्राविकाएँ थी। सिंहादि बहुत से तिर्यंच प्राणी भी अपने कोठे में विराजमान थे। समस्त वैभवों से सहित भगवान गंधकुटी में अधर कमलासन पर विराजमान थें। पूज्य माताजी ने कितने सुन्दर शब्दों में लिखा है–

गंधकुटी के मध्य सिंहासन, जिनवर अधर विराजें।
प्रातिहार्य की शोभा अनुपम, कोटि सूर्य शशि लाजें।।
सौ इन्द्रों से पूजित जिनवर, त्रिभुवन के गुरु मानें।
नमूँ नमूँ मैं हाथ जोड़कर, मेरे भवदुख हानें।।

विधान के अन्त में प्रशस्ति है। प्रशस्ति के बाद मेरे द्वारा रचित श्री नमिनाथ जन्मभूमि मिथिलापुरी तीर्थ की पूजा, श्री नमिनाथ भगवान की मंगल आरती, मिथिलापुरी तीर्थ की आरती एवं भजन आदि हैं। इस विधान में कुल 3 पूजा, 108 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य एवं 3 जयमालाएँ हैं।

यह विधान सभी करने, कराने वाले भव्य जीवों के लिए मंगलकारी हो, यही मंगल भावना है। विधान रचयित्री परम पूज्य आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती जी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, जिनेन्द्र देव से यही मंगल प्रार्थना है।

दो शब्द

–ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नमिजिन-पुंगवस्तनुभृतां गुरुरीप्सितदः।
विजयहानृपस्तव पिता खलु तीर्थकृतः।।
गुणमणिवप्पिला, सुतवती भुवि ते जननी।
वरमिथिलापुरी, सुरभृता किल रत्नभृता।।

भगवान महावीर के शासनकाल में बीसवीं, इक्कीसवीं शताब्दी में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी युगप्रवर्तिका, चारित्र चन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना करते हुए अब तक 400 ग्रंथों का लेखन आगम के अनुसार किया है।

आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान आदि सशक्त माध्यम है। जिनागम के चारों अनुयोगों का तलस्पर्शी ज्ञान रखने वाली पूज्य माताजी के पूजा विधानों में स्वाध्याय का पूरा विषय रहता है। माताजी का एक–एक शब्द जिनवाणी है। माताजी आगम से हटकर न कभी प्रवचन करती हैं और न कभी लेखनी चलाती हैं।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज का 3 बार दर्शन करने वाली, उनसे अनुभव ज्ञान प्राप्त करने वाली और उनके प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त करने वाली पूज्य माताजी की शिष्या का सौभाग्य जो मुझे मिला है, मैं समझती हूँ यह कई जन्मों के पुण्य से ही प्राप्त हुआ है।

पूज्य माताजी के चरण सानिध्य में रहकर, उनसे ज्ञानामृत का पान करते हुए मैं भी स्त्री पर्याय का छेदकर देवपद, मोक्षपद को प्राप्त करूँ यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु प्राप्त करें, जिनेन्द्रदेव से यही मंगल कामना करते हुए मैं पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि–कोटि नमन करती हूँ।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि– आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति– अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र–** गोयल, **नाम–** कु. मैना

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत– ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा– चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा– वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व– अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 400 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि– सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा– हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्मित 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम, ग्वालियर में चिन्तामणि पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा– पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा– 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा– जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) आचार्य श्री शांतिसागर सम्मेद शिखर ज्योति रथ (2014) भगवान ऋषभदेव विश्वशांति कलश यात्रा रथ-मांगीतुंगी (2015) के दो रथों का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
1. मंगलाचरण	1
2. श्री नमिनाथ स्तोत्र	2
3. श्री अर्हंत पूजा	3
4. श्री नमिनाथ तीर्थंकर पूजा	8
5. अथ 108 अर्घ्य	11
6. जयमाला	24
7. प्रशस्ति	26
8. श्री नमिनाथ जन्मभूमि मिथिलापुरी तीर्थ पूजा	27
9. भगवान श्री नमिनाथ की आरती	33
10. मिथिलापुरी तीर्थ की आरती	34
11. भजन–दुनिया में भगवन्तों की मूर्तियाँ अनेक हैं....	35
12. भजन–गंधोदक का माहात्म्य.....	36
13. भजन–जिनमंदिर का निर्माण	38
14. गुरु मंगलाष्टक	39

मण्डल का नक्शा

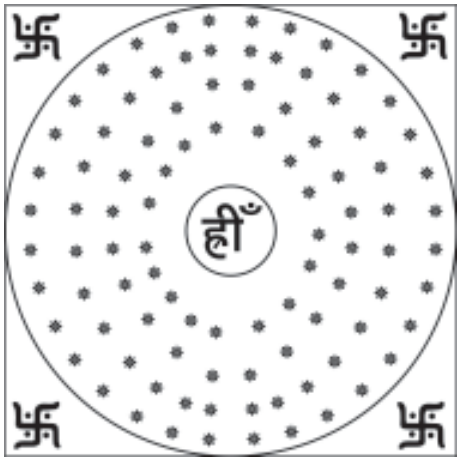

पूजा-3, कुल अर्घ्य-108, पूर्णार्घ्य-1, जयमाला-3

श्री नमिनाथ तीर्थंकर विधान

मंगलाचरण

सर्वसंगविरक्तः सन् , मुक्तिश्रीरक्तमानसः।
नमिनाथ! नमस्तुभ्यं, मह्यं मुक्तिश्रियं दिश।।1।।

जन्मोन्माज्यं भजतु भवतः पादपद्मं न लभ्यम्।
तच्चेत्स्वैरं चरतु न च दुर्देवतां सेवतां सः।।
अश्नात्यन्नं यदिह सुलभं दुर्लभं चेन्मुधास्ते।
क्षुद्व्यावृत्यै कवलयति कः कालकूटं बुभुक्षुः।।2।।

नमो जिनाय त्रिदशार्चिताय, विनष्टदोषाय गुणार्णवाय।
विमुक्तिमार्गप्रतिबोधनाय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय।।3।।

जन्म विनाशी चरण कमल तव, यदि नहिं मिले किसी जन को।
तो भी वह दुर्देव न सेवे, चाहे स्वैर रहे भी वो।।
सुलभ प्राप्त अन्नादि भरने, यदि अन्न कभी दुर्लभ होवे।
क्षुधा नाश के हेतु बुभुक्षू, कालकूट विष क्या पीवे ?।।4।।

नमूँ सुरों से अर्चित जिनवर, दोष रहित गुणसिंधु तुम्हें।
हे देवाधिदेव जिन शिवपथ, प्रतिबोधक मैं नमूँ तुम्हें।।5।।

श्री नमिनाथ स्तोत्र

नमिनाथ ! नमन करते तुमको, मुनिगण सुर नर खेचर आके।
मैं नमूँ सदा तुम चरण कमल, मम रोग शोक संकट भागे।।
मिथिला में विजय पिता माता, वप्पिला उन्हें सुरनर पूजें।
आश्विन वदि दूज गर्भ आए, उस तिथि को भी अब तक पूजें।।1।।

आषाढ़ वदी दशमी जन्में, इन्द्रों ने उत्सव नृत्य किया।
इस ही तिथि में परिग्रह छोड़ा, प्रभु ने निज में विश्राम किया।।
मगसिर सित ग्यारस में प्रभु के, पूर्णैक ज्ञान रवि उदित हुआ।
भव्यों के हृदय सरोज खिले, बहु दिन तक शिव पथ प्रगट रहा।।2।।

तनु साठ हाथ है कनक वर्ण, आयु दस सहस वर्ष प्रभु की।
बैसाख वदी चौदस के दिन, निर्वाण पधारे नमि जिन जी।।
नीलोत्पल चिह्न सहित भगवन् ! सब आधी व्याधि विनाश करो।
मुझ भाक्तिक पर करुणा करके, तत्क्षण मेरे भव पाश हरो।।3।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पूजा नं. १
श्री अर्हंत पूजा

स्थापना–गीता छंद

अरिहंत प्रभु ने घातिया को घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह दोष का सब क्षय किया।।
शत इंद्र नित पूजें उन्हें गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना के हेतु अभिनन्दन करें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–बसन्ततिलका छंद–

श्रीमज्जिनेंद्र पद में जलधार देऊं।
आतंकपंक जग का सब दूर होवे।।
इच्छानुसार फलदायक कल्पतरू ये।
पूजा जिनेन्द्रप्रभु की त्रय ताप नाशे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं निर्वपामीति स्वाहा।)

काश्मीरि केशर सुचंदन को घिसाऊँ।
चर्चूं जिनेन्द्र पदपंकज में रुची से।।
संसार के सकल ताप विनाश करती।
पूजा जिनेन्द्र प्रभु की सब सौख्य देती।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमात्मकेभ्यः चंदनं ... ।

जो कुंदपुष्प कलियों सम दीखते हैं।
धोये सु तंदुल लिये भर थाल में हैं।।
अर्हंत सन्मुख रखूँ बहु पुंज नीके।
पाथेय मोक्षपथ में जन के लिये हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनादिनिधनेभ्यः अक्षतं ... ।

मल्ली गुलाब वर पुष्प सुगंधि करते।
अर्हंत के चरण में रुचि से चढ़ाऊँ।।
पापान्धकूप मधि डूब रहे जनों को।
उद्धार हेतु जिनपूजन ही जगत् में।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः पुष्पं ... ।

शालीय ओदन सुगंधित भोज्यवस्तू।
पीयूष तुल्य चरु लेकर थाल भरके।।
अर्हंत सन्मुख चढ़ा क्षुध व्याधि नाशूँ।
तृप्ती अनंत जिनपूजन से मिलेगी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतज्ञानेभ्यः नैवेद्यं ... ।

जो चित्त का तमसमूह विनाश करके।
त्रैलोक्यगेह वर दीपक दीप ज्योति।।
ले दीप आरति करूँ वरज्ञानज्योति।
पाऊँ अनंत निजज्ञान विकास करके।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतदर्शनेभ्यः दीपं ... ।

जो धूप सुन्दर सुगंध बिखेरती है।
अग्नी विषे जलत धूम्र उड़ावती है।।
खेऊँ दशांगवर धूप जिनेन्द्र आगे।
संपूर्ण पाप जलते वर सौख्य होगा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतवीर्येभ्यः धूपं ... ।

ये कल्पवृक्ष फल सम अति मिष्ट ताजे।
अमृत समान रस से परिपूर्ण दीखें।।
पूजा करूँ फल चढ़ाकर आपकी मैं।
स्वात्मैक सिद्धि फल प्राप्त करूँ इसी से।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतसौख्येभ्यः फलं ... ।

नीरादि आठ वर द्रव्य संजोय करके।
घंटा ध्वजा चंवर छत्र सुदर्पणादी।।

मांगल्य द्रव्य शुभ लेकर पूजते ही।
संपूर्ण मंगल मिले निज सौख्य पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परममंगलेभ्यः अर्घ्यं ... ।

श्रीपूज्यपाद जिन के चरणाब्ज नमते।
संपूर्ण इंद्र शिर से अतिभक्ति भावे।।
श्री पूज्य के पदनिकट जलधार देते।
हो शांति लोक त्रय में मुझ भक्त को भी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतये शांतिधारां निष्पादयामि शांतिकृद्भ्यः स्वाहा।

(शांतिधारा करें)

जो इन्द्र भक्ति वश नेत्र हजार करके।
बाहू हजार कर तांडव नृत्य करता।।
ऐसे जिनेन्द्रपद पुष्प चढ़ाय करके।
पूजा त्रिकाल कर अनुपम सौख्य पाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः ध्यातृभिः अभीप्सितफलेभ्यः स्वाहा।

मंत्र जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।

(108 बार, 27 बार या 9 बार जाप्य करें)

(पुष्पांजलि चढ़ावें)

जयमाला

–दोहा–

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

–शम्भु छंद–

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवसरण में राज रहे।
जय जय अर्हंत् लक्ष्मी पाकर, निज आत्मा में ही आप रहे।।

जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पयसम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।1।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु हैं, शुभ लक्षण सहस आठ सोहें।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जन मन मोहें।।
केवल रविप्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानों।
चारों दिश इक-इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।2।।

हो गगन गमन, नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखें सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।
नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।3।।

सर्वार्ध मागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल औ फूल खिलें, दर्पणवत् भूरत्नाभ धरें।।
अनुकूल सुगंधित पवन चले, सब जन मन परमानंद भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।4।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शाली आदिक बहु धान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसुमंगल द्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।5।।

तरुवर अशोक सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि, चौंसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहें।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।6।।

क्षुध तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चउ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभू सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।7।।

मैं भी भवदुःख से घबड़ा कर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।
संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधी पूर्वक हो।
हो केवल 'ज्ञानमती' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।8।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जयमाला महार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–दोहा –

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमो नमो अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. २

श्री नमिनाथ तीर्थंकर पूजा

–अथ स्थापना-गीता छंद –

नमिनाथ के गुणगान से, भविजन भवोदधि से तिरें।
मुनिगण तपोनिधि भी हृदय में, आपकी भक्ती धरें।।
हम भी करें आह्वान प्रभु का, भक्ति श्रद्धा से यहाँ।
सम्यक्त्व निधि मिल जाय स्वामिन्! एक ही वांछा यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक – स्रग्विणी छंद –

स्वात्म का साम्यरस नाथ! दीजे मुझे।
नीर से पाद में तीन धारा करूँ।।
मैं नमीनाथ के पाद को पूजहूँ।
स्वात्म सिद्धी मिले एक ही याचना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्म सौरभ मिले चित्त उसमें रमे।
गंध से आपके चर्ण चर्चन करूँ।।मै.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान अक्षय बने नाथ! कीजे कृपा।
शालि के पुंज से पूजहूँ भक्ति से।।मै.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सौख्य पीयूष पीऊँ सुतृप्ती मिले।
पुष्प मंदारमाला चढ़ाऊँ तुम्हें।।मै.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथतीर्थंकराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भूख व्याधी मिटा दो प्रभो! मूल से।
मैं चढ़ाऊँ तुम्हें खीर लाडू अबे।।
मैं नमीनाथ के पाद को पूजहूँ।
स्वात्म सिद्धी मिले एक ही याचना।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंधेर में आत्मनिधि ना मिले।
आरती मैं करूँ ज्ञान ज्योती भरो।।मै.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथतीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेऊँ सुगंधी उड़े लोक में।
स्वात्म गुण गंध फैले प्रभो! शक्ति दो।।मै.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्म की संपदा दीजिए हे प्रभो!
आम अंगूर फल को चढ़ाऊँ तुम्हें।।मै.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य अर्पण करूँ स्वात्म पद के लिए।
''ज्ञानमति'' पूर्ण हो बस यही कामना।।मै.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

नमि जिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले स्वात्म साम्राज्य, त्रिभुवन में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार, जिनपद कुसुमांजलि करूँ।
मिले स्वात्म सुखसार, त्रिभुवन की सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–चौपाई छंद –

मिथिलापुरी में विजय पिता थे। मात वप्पिला गर्भ बसे थे।।
वदि आसोज दुतिय हम पूजें। गर्भ कल्याण जजत अघ छूटें।।1।।

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णाद्वितीयायां श्रीनमिनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि आषाढ़ दशमि नमि जन्में। न्हवन किया सुरगण इन्द्रों ने।।
जन्म कल्याणक मैं नित वंदूँ। जन्म मरण के दुःख को खंडूँ।।2।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां श्रीनमिनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाति स्मृति से हुई विरक्ती। तिथि आषाढ़ वदी दशमी थी।।
उत्तरकुरु पालकि से जाके। दीक्षा ली थी चैत्रवनी में।।3।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां श्रीनमिनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर सुदि ग्यारस सायं के। वकुल वृक्ष के नीचे तिष्ठे।।
घट में केवलज्ञान प्रकाशा। जजूँ प्रभो! भविकमल विकासा।।4।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां श्रीनमिनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

वदि चौदस वैशाख निशांते। गिरि सम्मेद ध्यान में तिष्ठे।।
मुक्तिरमा को वरण किया था। इन्द्रों ने बहु भक्ति किया था।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीनमिनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

श्री नमिनाथ जिनेश हैं, सर्वसौख्य दातार।
अर्घ्य चढ़ाकर जजत ही, भरें रत्न भंडार।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ १०८ अर्घ्य

–दोहा–

सब कर्मों में एक ही, मोह कर्म बलवान।
उसके नाशन हेतु मैं, पूजूँ भक्ति प्रधान।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–सोरठा–

'महामुनि' प्रभु आप, मुनियों में उत्तम कहे।
श्री नमिजिन तुम पाद, पूजत ही सुखसंपदा।।1।।

ॐ ह्रीं महामुनये श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि हो मौन धरंत प्रभु 'महामौनी' तुम्हीं।
श्री नमिजिन पूजंत, रोग शोक संकट टले।।2।।

ॐ ह्रीं महामौनिने श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म शुक्लद्वय ध्यान, धार 'महाध्यानी' हुये।
श्री नमिजिन का ध्यान, करते ही सब सुख मिले।।3।।

ॐ ह्रीं महाध्यानिने श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण जितेंद्रिय आप, नाम 'महादम' धारते।
श्री नमिजिन तुम पाद, पूजत आतम निधि मिले।।4।।

ॐ ह्रीं महादमाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ क्षमा के ईश, नाम 'महाक्षम' सुर कहें।
श्री नमिजिन नत शीश, पूजूँ मैं अतिभाव से।।5।।

ॐ ह्रीं महाक्षमाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठरह सहस सुशील, 'महाशील' तुम नाम है।
पूरण हो गुण शील, नमिनाथ को पूजहूँ।।6।।

ॐ ह्रीं महाशीलाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप अग्नी में आप, कर्मेंधन को होमिया।
'महायज्ञ' तुम नाथ, पूजूँ भक्ति बढ़ायके।।7।।

ॐ ह्रीं महायज्ञाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय पूज्य जिनेश! नाम 'महामख' धारते।
पूजूँ भक्ति समेत, नमिनाथ प्रभु सुख मिले।।8।।

ॐ ह्रीं महामखाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच महाव्रत ईश, नाम 'महाव्रतपति' धरा।
जजूँ नमाकर शीश, नमिनाथ प्रभु आपके।।9।।

ॐ ह्रीं महाव्रतपतये श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मह्य' आप जगपूज्य, गणधर साधूगण नमें।
मिलें स्वात्मपद पूज्य, नमिनाथ को पूजते।।10।।

ॐ ह्रीं मह्याय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकान्तिधर' आप अतिशय कांतिनिधान हो।
श्री नमिजिन तुम जाप, करे अतुल सुखसंपदा।।11।।

ॐ ह्रीं महाकांतिधराय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब के स्वामी इष्ट, अतः 'अधिप' सुरगण कहें।
नाशो सर्व अनिष्ट, नमिनाथ तुम पूजहूँ।।12।।

ॐ ह्रीं अधिपाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामैत्रिमय' नाथ! सबसे मैत्रीभाव है।
श्री नमिजिन तुम जाप, त्रिभुवन को वश में करे।।13।।

ॐ ह्रीं महामैत्रीमयाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनवधि गुण के नाथ, तुम्हें 'अमेय' मुनी कहें।
पूजत बनूँ सनाथ, नमिनाथ प्रभु आपके।।14।।

ॐ ह्रीं अमेयाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महोपाय' तुम नाथ! शिव के श्रेष्ठ उपाययुत।
जजत सर्व सुखसाथ, नमिनाथ को नित जपूँ।।15।।

ॐ ह्रीं महोपायाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'महोमय' आप, अति उत्सव अरु ज्ञानयुत।
श्री नमिजिन तुम जाप, सर्व उपद्रव नाशता।।16।।

ॐ ह्रीं महोमयाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकारुणिक' आप दया धर्म उपदेशिया।
श्री नमिजिन का जाप्य, करत जन्म मृत्यु टले।।17।।

ॐ ह्रीं महाकारुणिकाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंता' आप महान, सब पदार्थ को जानते।
जजूँ नाम गुणखान, पूर्ण ज्ञान संपति मिले।।18।।

ॐ ह्रीं मंत्रे श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व मंत्र के ईश, 'महामंत्र' तुम नाम है।
तुम्हें नमें गणधीश, नमिनाथ मैं भी जजूँ।।19।।

ॐ ह्रीं महामंत्राय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यतिगण में अतिश्रेष्ठ, नाम 'महायति' आपका।
पूजत ही पद श्रेष्ठ, नमिनाथ को पूजहूँ।।20।।

ॐ ह्रीं महायतये श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महानाद' प्रभु आप, दिव्यध्वनी गंभीर धर।
नमत बनूँ निष्पाप, नमिनाथ को मैं जजूँ।।21।।

ॐ ह्रीं महानादाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनी गंभीर, योजन तक सुनते सभी।
जजत मिले भव तीन, 'महाघोष' तुम नाम को।।22।।

ॐ ह्रीं महाघोषाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'महेज्य' सुनाम, महती पूजा पावते।
सौ इन्द्रों से मान्य, नमिनाथ मैं पूजहूँ।।23।।

ॐ ह्रीं महेज्याय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महसांपति' प्रभु आप, सर्व तेज के ईश हो।
तुम प्रताप भवताप, हरण करे मैं पूजहूँ।।24।।

ॐ ह्रीं महासांपतये श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान यज्ञ को धार, नाम 'महाध्वरधर' प्रभू।
मिले सर्व सुखसार, नमिनाथ को पूजहूँ।।25।।

ॐ ह्रीं महाध्वरधराय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–स्रग्विणी छंद–

'धुर्य' हो मुक्ति के मार्ग में श्रेष्ठ हो।
कर्म-भू आदि में सर्व में ज्येष्ठ हो।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।26।।

ॐ ह्रीं धुर्याय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महौदार्य' अतिशायि ऊदार हो।
आप निर्ग्रंथ भी इष्ट दातार हो।।आप.।।27।।

ॐ ह्रीं महौदार्याय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य वाक्याधिपति सु 'महिष्ठवाक्' हो।
दिव्यवाणी सुधावृष्टि कर्ता सु हो।।आप.।।28।।

ॐ ह्रीं महिष्ठवाचे श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक आलोक व्यापी 'महात्मा' तुम्हीं।
अंतरात्मा पुनः सिद्ध आत्मा तुम्हीं।।आप.।।29।।

ॐ ह्रीं महात्मने श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व तेजोमयी 'महासांधाम' हो।
आत्म के तेज से सर्व जग मान्य हो।।आप.।।30।।

ॐ ह्रीं महासांधाम्ने श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व ऋषि में प्रमुख हो 'महिर्षि' तुम्हीं।
ऋद्धि सिद्धि धरो आप सुख की मही।।आप.।।31।।

ॐ ह्रीं महर्षये श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ भव धार के आप 'महितोदया'।
तीर्थकर नाम से पूज्य धर्मोदया।।आप.।।32।।

ॐ ह्रीं महितोदयाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो 'महाक्लेशअंकुश' परीषहजयी।
क्लेश के नाश हेतू सुअंकुश सही।।आप.।।33।।

ॐ ह्रीं महाक्लेशांकुशाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शूर' हो कर्मक्षय दक्ष हो लोक में।
नाथ! मेरे हरो कर्म आनन्द हो।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।34।।

ॐ ह्रीं शूराय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महाभूतपति' गणधराधीश हो।
नाथ! रक्षा करो आप जगदीश हो।।आप.।।35।।

ॐ ह्रीं महाभूतपतये श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आपही हो 'गुरू' धर्म उपदेश हो।
तीन जग में तुम्हीं श्रेष्ठ हो सौख्य दो।।आप.।।36।।

ॐ ह्रीं गुरवे श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ही हो 'महापराक्रम' के धनी।
केवलज्ञान से सर्ववस्तू भणी।।आप.।।37।।

ॐ ह्रीं महापराक्रमाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'अनंत' आपका अंत ना हो कभी।
नाथ! दीजे अनंतों गुणों को अभी।।आप.।।38।।

ॐ ह्रीं अनन्ताय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महाक्रोधरिपु' क्रोध शत्रु हना।
सर्व दोषारिनाशा सुमृत्यु हना।।आप.।।39।।

ॐ ह्रीं महाक्रोधरिपवे श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप इंद्रिय 'वशी' लोक तुम वश्य में।
आत्मवश मैं बनूँ चित्त को रोक के।।आप.।।40।।

ॐ ह्रीं वशिने श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! हो 'महाभवाब्धिसंतारि' भी।
आप संसार सागर तरा तारते।।आप.।।41।।

ॐ ह्रीं महाभवाब्धिसंतारिणे श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ही 'महामोहाद्रिसूदन' कहे।
मोह पर्वत सुभेदा सुज्ञाता बनें।।आप.।।42।।

ॐ ह्रीं महामोहाद्रिसूदनाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ही हो 'महागुणाकर' लोक में।
रत्नत्रय की खनी भव्य पूजूँ तुम्हें।।आप.।।43।।

ॐ ह्रीं महागुणाकराय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षान्त' हो सर्वपरिषह उपद्रव सहा।
आपकी भक्ति से हो क्षमा गुण महा।।आप.।।44।।

ॐ ह्रीं क्षान्ताय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो 'महायोगिश्वर' गणधरादी पती।
योगियों में धुरंधर जगत के पती।।आप.।।45।।

ॐ ह्रीं महायोगीश्वराय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'शमी' शांतपरिणाम से विश्व में।
पूर्ण शांती मिले पूजहूँ नाथ! मैं।।आप.।।46।।

ॐ ह्रीं शमिने श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'महाध्यानपति' शुक्लध्यानीश हो।
शुक्ल परिणाम हों नाथ! वरदान दो।।आप.।।47।।

ॐ ह्रीं महाध्यानपतये श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ध्यातमहाधर्म' सब जीव रक्षा करो।
शुभ अहिंसामयी धर्म के हो धुरी।।आप.।।48।।

ॐ ह्रीं ध्यातमहाधर्माय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'महाव्रत' प्रभो! पाँच व्रत श्रेष्ठ धर।
पूर्ण होवें महाव्रत बनूँ मुक्तिवर।।आप.।।49।।

ॐ ह्रीं महाव्रताय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'महाकर्मअरिहा' महावीर हो।
कर्म अरि को हना आप अरिहंत हो।।आप.।।50।।

ॐ ह्रीं महाकर्मारिघ्ने श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दरी-छंद

जिन स्वरूप विदित 'आत्मज्ञ' हो।
सब चराचर लोक सुविज्ञ हो।।
जजतहूँ नमिनाथ सुमंत्र को।
सकल सौख्य लहूँ हन कर्म को।।51।।

ॐ ह्रीं आत्मज्ञाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व देवन मधि 'महादेव' हो।
सुर असुर पूजित महादेव हो।।जजतहूँ.।।52।।

ॐ ह्रीं महादेवाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महत समरथवान 'महेशिता'।
सकल ऐश्वर धारि जिनेशिता।।जजतहूँ.।।53।।

ॐ ह्रीं महेशित्रे श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरवक्लेशापह' दुख नाशिये।
सकल ज्ञान सुधामय साजिये।।जजतहूँ.।।54।।

ॐ ह्रीं सर्वक्लेशापहाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज हितंकर 'साधु' कहावते।
स्वपर हित साधन बतलावते।।जजतहूँ.।।55।।

ॐ ह्रीं साधवे श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरवदोषहरा' जिन आप हो।
सकल गुणरत्नाकर नाथ हो।।जजतहूँ.।।56।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषहराय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हर' तुम्हीं सब पाप विनाशते।
प्रभु अनंतसुखाकर आप ही।।जजतहूँ.।।57।।

ॐ ह्रीं हराय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'असंख्येय' प्रभु आप ही।
गिन नहीं सकते गुण साधु भी।।जजतहूँ.।।58।।

ॐ ह्रीं असंख्येयाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रमेयात्मा' जिन आप हो।
अनवधी शक्तीधर नाथ हो।।
जजतहूँ नमिनाथ सुमंत्र को।
सकल सौख्य लहूँ हन कर्म को।।59।।

ॐ ह्रीं अप्रमेयात्मने श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'शमात्मा' शांतस्वरूप हो।
सकल कर्मक्षयी शिवभूप हो।।जजतहूँ.।।60।।

ॐ ह्रीं शमात्मने श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगट 'प्रशमाकर' शमखानि हो।
जगत शांतिसुधा बरसावते।।जजतहूँ.।।61।।

ॐ ह्रीं प्रशमाकराय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरवयोगीश्वर' मुनि ईश हो।
गणधरादि नमावत शीश हो।।जजतहूँ.।।62।।

ॐ ह्रीं सर्वयोगीश्वराय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुवन में तुम ईश 'अचिन्त्य' हो।
नहिं किसी जन के मन चिन्त्य हो।।जजतहूँ.।।63।।

ॐ ह्रीं अचिन्त्याय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'श्रुतात्मा' सब श्रुत रूप हो।
सकल भाव श्रुतांबुधि चन्द्र हो।।जजतहूँ.।।64।।

ॐ ह्रीं श्रुतात्मने श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल जानत 'विष्टरश्रव' कहे।
धरम अमृतवृष्टि करो सदा।।जजतहूँ.।।65।।

ॐ ह्रीं विष्टरश्रवसे श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वश किया मन 'दान्तात्मा' प्रभो।
सुतप क्लेश सहा जिन आपने।।जजतहूँ.।।66।।

ॐ ह्रीं दान्तात्मने श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम्हीं 'दमतीरथईश' हो।
सकल इन्द्रियनिग्रह तीर्थ हो।।जजतहूँ.।।67।।

ॐ ह्रीं दमतीर्थेशाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल ध्यात सु 'योगात्मा' तुम्हीं।
शुकल योगधरा जिन आपने।।जजतहूँ.।।68।।

ॐ ह्रीं योगात्मने श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सदा तुम 'ज्ञानसुसर्वगा'।
जगत व्याप्त किया निज ज्ञान से।।जजतहूँ.।।69।।

ॐ ह्रीं ज्ञानसर्वगाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्रधान' तुम्हीं त्रय लोक में।
प्रमुख हो निज आतम ध्यान से।।जजतहूँ.।।70।।

ॐ ह्रीं प्रधानाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमहि 'आत्मा' ज्ञान स्वरूप हो।
सकल लोक अलोक सुजानते।।जजतहूँ.।।71।।

ॐ ह्रीं आत्मने श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रकृति' हो तिहुँलोक हितैषि हो।
प्रकृतिरूप धरम उपदेशि हो।।जजतहूँ.।।72।।

ॐ ह्रीं प्रकृतये श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परम' हो सबमें उत्कृष्ट हो।
परम लक्ष्मीयुत जिनश्रेष्ठ हो।।जजतहूँ.।।73।।

ॐ ह्रीं परमाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत 'परमोदय' जिननाथ हो।
परम वैभव से तुम ख्यात हो।।जजतहूँ.।।74।।

ॐ ह्रीं परमोदयाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्रक्षीणाबंध' जिनेश हो।
सकल कर्म विहीन तुम्हीं कहे।।जजतहूँ.।।75।।

ॐ ह्रीं प्रक्षीणबंधाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीदाम-छंद

प्रभो! तुम 'कामारी' जग सिद्ध।
किया तुम काम महाअरि विद्ध।।
जजूँ नमिनाथ महा गुणखान।
भजूँ निज धाम अनन्त महान्।।76।।

ॐ ह्रीं कामारये श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'क्षेमकृता' अभिराम।
जगत् कल्याण किया सुखधाम।।जजूँ.।।77।।

ॐ ह्रीं क्षेमकृते श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो तुम 'क्षेमसुशासन' सिद्ध।
किया मंगल उपदेश समृद्ध।।जजूँ.।।78।।

ॐ ह्रीं क्षेमशासनाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणव' तुमही ओंकार स्वरूप।
सभी मंत्रों मधि शक्तिस्वरूप।।जजूँ.।।79।।

ॐ ह्रीं प्रणवाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणय' सबका तुमही में प्रेम।
नहीं तुम बिन होता सुख क्षेम।।जजूँ.।।80।।

ॐ ह्रीं प्रणयाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं प्रभु 'प्राण' जगत् के त्राण।
दिया सब ही को जीवन दान।।जजूँ.।।81।।

ॐ ह्रीं प्राणाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'प्राणद' बलदातार।
सभी जन रक्षक नाथ उदार।।जजूँ.।।82।।

ॐ ह्रीं प्राणदाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'प्रणतेश्वर' भव्यन ईश।
नमें तुमको उनके प्रभु ईश।।जजूँ.।।83।।

ॐ ह्रीं प्रणतेश्वराय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रमाण' तुम्हीं जग ज्ञान धरंत।
तुम्हें भवि पा होते भगवंत।।
जजूँ नमिनाथ महा गुणखान।
भजूँ निज धाम अनन्त महान्।।84।।

ॐ ह्रीं प्रमाणाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'प्रणिधी' निधियों के स्वामि।
अनंत गुणाकर अंतर्यामि।।जजूँ.।।85।।

ॐ ह्रीं प्रणिधये श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं प्रभु 'दक्ष' समर्थ सदैव।
करो मुझ कर्म अरी का छेव।।जजूँ.।।86।।

ॐ ह्रीं दक्षाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'दक्षिण' हो सर्व प्रवीण।
सरल अतिशायि महागुणलीन।। जजूँ.।।87।।

ॐ ह्रीं दक्षिणाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'अध्वर्यु' सुयज्ञ करंत।
महा शिवमार्ग दिया भगवंत।।जजूँ.।।88।।

ॐ ह्रीं अध्वर्यवे श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अध्वर' शिवपथ दर्शंत।
सदा ऋजु ही परिणाम धरंत।।जजूँ.।।89।।

ॐ ह्रीं अध्वराय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुमही 'आनंद' अनूप।
मुझे सुखदेव सदा सुखरूप।।जजूँ.।।90।।

ॐ ह्रीं आनन्दाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा सबको आनंद करंत।
तुम्हीं प्रभु 'नन्दन' नाम धरंत।।जजूँ.।।91।।

ॐ ह्रीं नन्दनाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो तुम 'नन्द' समृद्ध निधान।
सदा करते तुम ज्ञान सुदान।।जजूँ.।।92।।

ॐ ह्रीं नंदाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो तुम 'वंद्य' सुरासुर पूज्य।
सभी वंदन करते अनुकूल्य।।जजूँ.।।93।।

ॐ ह्रीं वंद्याय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनिंद्य' तुम्हीं सब दोष विहीन।
अनंत गुणों के पुंज प्रवीण।।जजूँ.।।94।।

ॐ ह्रीं अनिंद्याय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अभिनंदन' जग आनंद।
प्रशंसित हो त्रिभुवन में वंद्य।।जजूँ.।।95।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'कामह' काम हनंत।
विषयविषमूर्च्छित को सुखकंद।।जजूँ.।।96।।

ॐ ह्रीं कामघ्ने श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो तुम 'कामद' हो जग इष्ट।
सभी अभिलाष करो तुम सिद्ध।।जजूँ.।।97।।

ॐ ह्रीं कामदाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोहर 'काम्य' सभी जन इष्ट।
तुम्हें नित चाहत साधु गणीश।।जजूँ.।।98।।

ॐ ह्रीं काम्याय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोरथ पूरण 'कामसुधेनु'।
करो मुझ वांछित पूर्ण जिनेंद्र।।जजूँ.।।99।।

ॐ ह्रीं कामधेनवे श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अरिंजय' आप करम अरि जीत।
हरो मुझ कर्म तुम्हीं जगमीत।।जजूँ.।।100।।

ॐ ह्रीं अरिंजयाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुजंगी छंद

'अमितशासना' धर्म अनुपम कहा।
मुझे आप सम नाथ कीजे अबे।।

जजूँ मैं नमिनाथ को भक्ति से।
पियूँ आत्म पीयूष भी युक्ति से।।101।।

ॐ ह्रीं अमितशासनाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितक्रोध' हो आप शांती सुधा।
महा शांति से क्रोध जीता सभी।।जजूँ.।।102।।

ॐ ह्रीं जितक्रोधाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितामित्र' कोई न शत्रु रहा।
प्रभो! आप ही सर्वप्रिय लोक में।।जजूँ.।।103।।

ॐ ह्रीं जितामित्राय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितक्लेश' सब क्लेश जीता तुम्हीं।
सभी क्लेश मेरे निवारो अबे।।जजूँ.।।104।।

ॐ ह्रीं जितक्लेशाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितांतक प्रभो! मृत्यु को नशियां।
समाधी मिले अंत में भी मुझे।।जजूँ.।।105।।

ॐ ह्रीं जितांतकाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'जिनेन्द्र' हो विश्व में।
तुम्हीं श्रेष्ठ हो कर्मजयि साधु में।।जजूँ.।।106।।

ॐ ह्रीं जिनेंद्राय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो आप ही 'परमआनंद' हो।
मुझे आत्म आनंद दीजे अबे।।जजूँ.।।107।।

ॐ ह्रीं परमानंदाय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'मुनींद्र हो लोक में।
मुनीनाथ मानें नमें साधु भी।।जजूँ.।।108।।

ॐ ह्रीं मुनींद्राय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

प्रभु महामुनी से लेकर इक सौ, आठ नाम तुम जग पूजें।
जो भक्ति वंदना नित्य करें, वो भव भव के दुख से छूटें।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ा करके, मेरी भव भव की व्याधि हरो।
प्रभु सात परमस्थान देय, जिनगुण संपत्ती पूर्ण करो।।1।।

ॐ ह्रीं महामुनि-आदिअष्टोत्तरशतनाममंत्रसमन्विताय श्रीनमिनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथतीर्थंकराय नमः।**

जयमाला

—सोरठा—

तीर्थंकर नमिनाथ, अतुल गुणों के तुम धनी।
नमूँ नमाकर माथ, गाऊँ गुणमणिमालिका।।1।।

–नरेन्द्र छंद –

जय जय तीर्थंकर क्षेमंकर, गणधर मुनिगण वंदे।
जय जय समवसरण परमेश्वर, वंदत मन आनंदे।।
प्रभु तुम समवसरण अतिशायी, धनपति रचना करते।
बीस हजार सीढ़ियों ऊपर, शिला नीलमणि धरते।।2।।

धूलिसाल परकोटा सुंदर, पंचवर्ण रत्नों के।
मानस्तंभ चार दिश सुंदर, अतिशय ऊँचे चमकें।।
उनके चारों दिशी बावड़ी, जल अति स्वच्छ भरा है।
आसपास के कुंड नीर में, पग धोती जनता है।।3।।

प्रथम चैत्यप्रासाद भूमि में, जिनगृह अतिशय ऊँचे।
खाई लताभूमि उपवन में, पुष्प खिलें अति नीके।।
वनभूमी के चारों दिश में, चैत्यवृक्ष में प्रतिमा।
कल्पभूमि सिद्धार्थ वृक्ष को, नमूँ नमूँ अतिमहिमा।।4।।

ध्वजा भूमि की उच्च ध्वजाएँ, लहर लहर लहरायें।
भवनभूमि के जिनबिम्बों को, हम नित शीश झुकायें।।
श्रीमंडप में बारह कोठे, मुनिगण सुरनर बैठे।
पशुगण भी उपदेश श्रवण कर, शांतचित्त वहाँ बैठे।।5।।

सुप्रभमुनि आदिक गुरु गणधर, सत्रह समवसरण में।
मुनिगण बीस हजार वहाँ पे, मगन हुए जिनगुण में।।
गणिनी वहाँ मंगिनी माता, पिच्छी कमण्डलु धारी।
पैंतालीस हजार आर्यिका, श्वेत शाटिकाधारी।।6।।

एक लाख श्रावक व श्राविका, तीन लाख भक्तीरत।
असंख्यात थे देव देवियाँ, सिंहादिक बहु तिर्यक्।।
साठ हाथ तनु दश हजार, वर्षायु देह स्वर्णिम था।
नीलकमल नमि चिन्ह कहाया, भक्ति भवोदधि नौका।।7।।

गंधकुटी के मध्य सिंहासन, जिनवर अधर विराजें।
प्रातिहार्य की शोभा अनुपम, कोटि सूर्य शशि लाजें।।
सौ इन्द्रों से पूजित जिनवर, त्रिभुवन के गुरु मानें।
नमूँ नमूँ मैं हाथ जोड़कर, मेरे भवदुःख हानें।।8।।

–दोहा –

चिन्मय चिंतामणि प्रभो! चिंतित फल दातार।
ज्ञानमती सुख संपदा, दीजे निजगुण सार।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छन्द–

जो भव्य नमिनाथ का विधान करेंगे।
वे मनुज देव के सुखों को प्राप्त करेंगे।।
फिर कर्मभूमि में जनम ले ध्यान करेंगे।
आर्हन्त्य ज्ञानमती सूर्य उदय करेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–दोहा–

श्री ऋषभदेव से वीर तक, तीर्थंकर भगवान।
उन सबके पद कमल को, नमूँ नमूँ शुभ ध्यान।।1।।

मूलसंघ में कुंदकुंद-अन्वय सरस्वति गच्छ।
बलात्कारगण में हुए, सूरि नमूँ मन स्वच्छ।।2।।

सदी बीसवीं के प्रथम गुरु महान आचार्य।
चरित चक्रवर्ती श्री-शांतिसागराचार्य।।3।।

इनके पहले शिष्य श्री-वीरसागराचार्य।
प्रथमहि पट्टाचार्य गुरु, नमूँ भक्ति उर धार्य।।4।।

'श्री नमिनाथ विधान' यह, पूर्ण किया सुखकार।
करो करावो भव्यजन, यह विधान रुचि धार।।5।।

जब तक नहिं हो 'ज्ञानमती', केवल एक महान्।
तब तक जग में स्थायि हो, यह नमिनाथ विधान।।8।।

हस्तिनागपुर तीर्थ पर, जब तक तेरहद्वीप।
तब तक लघूविधान यह, बने सिद्धिपथ दीप।।9।।

।। इति श्रीनमिनाथतीर्थंकरविधानं संपूर्णम् ।।

।। जैनं जयतु शासनम् ।।

पूजा नं. ३
श्री नमिनाथ जन्मभूमि मिथिलापुरी तीर्थ पूजा

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

स्थापना (शंभु छंद)

श्री मल्लिनाथ नमिनाथ जिनेश्वर, जन्मभूमि मिथिलानगरी।
तीर्थंकर द्वय के चार-चार, कल्याणक से पावन नगरी।।
उस मिथिलापुरि की पूजन का, मैंने शुभ भाव बनाया है।
स्थापन विधि द्वारा मैंने, निज मन को तीर्थ बनाया है।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अष्टक (गीता छन्द)

लेकर विमल जल तीर्थ पूजूँ, कर्ममल हट जाएगा।
अध्यात्म रस होगा प्रगट, आनन्द अनुभव आएगा।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध लेकर, पदकमल चर्चन करूँ।
आत्मीक समतारस मगन हो, तीर्थ का अर्चन करूँ।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव-भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदा किरण सम धवल अक्षत, पुंज प्रभु सम्मुख धरूँ।
शुभ ध्यान में लवलीन होकर, आत्म अक्षयनिधि भरूँ।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली पुष्प सुरभित, लाय जो प्रभु पद जजें।
उन आत्मगुण कलिका खिले, अतिशीघ्र कामव्यथा नशे।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गुझिया समोसे आदि व्यंजन, लाय प्रभु सम्मुख धरूँ।
अध्यात्मरस अमृत विमिश्रित, अतुल अनुपम सुख वरूँ।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतदीप की ज्योती जलाकर, आरती प्रभु की करूँ।
अज्ञानतिमिर हटाय अन्तर, ज्ञान की ज्योति भरूँ।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुरभित धूप लेकर, अग्नि प्रज्ज्वालन करूँ।
जड़कर्म को कर दग्ध अपनी, आतमा पावन करूँ।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अखरोट किसमिस आम्र आदिक, फल चढ़ा पूजन करूँ।
फल मोक्ष की अभिलाष लेकर, तीर्थ का अर्चन करूँ।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध तंदुल पुष्प नेवज, दीप धूप व फल लिया।
प्रभु पदकमल में ''चन्दनामति'' अर्घ मैं अर्पण किया।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

कंचन झारी में भरा, गंग नदी का नीर।
तीर्थ पाद धारा करूँ, मिले भवोदधि तीर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

प्रभु के उपवन से चुना, बेला जुही गुलाब।
पुष्पांजलि अर्पण किया, मिला निजातम लाभ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

मिथिलापुरी तीर्थक्षेत्र के अर्घ्य (दोहा)

चैत्र सुदी एकम जहाँ, हुआ गर्भ कल्याण।
मल्लिनाथ की वह धरा, पूजूँ हो कल्याण।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथगर्भकल्याणकपवित्रमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगशिर सुदि ग्यारस जहाँ, हुआ जन्मकल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ, मिथिला जन्मस्थान।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथजन्मकल्याणकपवित्रमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मतिथी को ही जहाँ, उपजा प्रभु वैराग।
पूजूँ मैं मिथिलापुरी, दीक्षास्थल आज।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रमिथिला-पुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदी दुतिया तिथि, पाया केवलज्ञान।
मल्लिनाथ की वह धरा, पूजूँ सौख्य महान।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र-मिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

आश्विन कृष्णा दूज, नमि प्रभु आये गर्भ में।
वह मिथिलापुरि पूज्य, अतः चढ़ाऊँ अर्घ्य मैं।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनमिनाथगर्भकल्याणकपवित्रमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी वदि आषाढ़, नमि जिनवर जन्मे जहाँ।
जजूँ जन्मस्थान, मिथिला में उत्सव हुआ।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनमिनाथजन्मकल्याणकपवित्रमिथिला-पुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मदिवस ही त्याग, लिया नमीप्रभु ने जहाँ।
पूजूँ दीक्षाधाम, मिथिलापुरि तीरथ महा।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनमिनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रमिथिला-पुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारस मगसिर शुक्ल, केवलज्ञान प्रकाश था।
नमिप्रभु हुए विशुद्ध, पूजूँ मिथिला की धरा।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनमिनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

मिथिलापुरि की जिस धरती पर, श्री मल्लि व नमिप्रभु जन्मे हैं।
उन दोनों प्रभु के गर्भ जन्म, तप ज्ञान कल्याण वहीं पे हैं।।
उस नगरी को मैं अर्घ्य चढ़ाकर, एक यही प्रार्थना करूँ।
रत्नत्रय निधि हो पूर्ण मेरी, तब भव सन्तति खंडना करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुः–चतुःकल्याणकपवित्रमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं मिथिलापुरीजन्मभूमिपवित्रीकृत-श्रीमल्लिनाथनमिनाथ–तीर्थंकराभ्यां नमः।

जयमाला

(शेर छंद)

हे नाथ ! तेरे जन्म से भू धन्य हुई है।
हे नाथ ! तेरे जन्म मरण कुछ भी नहीं है।। टेक0।।
तुमने अनादिकाल से जग में भ्रमण किया।
पुरुषार्थ करके उसका अब अंत कर दिया ।।हे नाथ0।।1।।
भव भव से आत्मतत्व के चिन्तन में लग गये।
इस हेतु ही प्रभु एक दिन भगवान बन गये।।हे नाथ0।।2।।
श्री मल्लिप्रभु उन्नीसवें तीर्थेश जैन के।
जन्मे थे जो मिथिलापुरी में स्वर्ग से आके।।हे नाथ0।।3।।

पितु कुम्भराज एवं माता प्रजावती।
थे धन्य तथा मिथिला की धन्य प्रजा थी।।हे नाथ0।।4।।
जातिस्मरण से प्रभु को वैराग्य जब हुआ।
बन बालयती तप कर कैवल्य वर लिया।।हे नाथ0।।5।।
नमिनाथ जी इक्कीसवें तीर्थेश भी जन्मे।
समझो कि तीस माह वहाँ रत्न थे बरसे।।हे नाथ0।।6।।
माँ वप्पिला की महिमा का पार नहीं था।
राजा विजय का हर्ष भी अपार वहीं था।। हे नाथ0।।7।।
जातिस्मरण से उनको भी वैराग्य हो गया।
सब राजपाट छोड़ शिव से राग हो गया।। हे नाथ0।।8।।
तीर्थंकरों की धरती ही तीर्थ कहाती।
तीर्थों की वन्दना ही आत्मकीर्ति बढ़ाती।।हे नाथ0।।9।।
मैं तीर्थक्षेत्र मिथिला की वन्दना करूँ।
जयमाल का पूर्णार्घ्य लेके अर्चना करूँ।। हे नाथ0।।10।।
मैं भी मनुष जनम का सार प्राप्त कर सकूँ।
वरदान दो निज आत्म का उद्धार कर सकूँ।। हे नाथ0।।11।।
अतएव ''चन्दनामती'' यह प्रार्थना करे।
हो रत्नत्रय की प्राप्ति यही याचना करे।। हे नाथ0।।12।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छन्द–

जो भव्यप्राणी नमि प्रभू की, जन्मभूमी को नमें।
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बने।।
कर पुण्य का अर्जन कभी, तो जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की शृंखला में, 'चन्दना' वे आयेंगे।।1।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

भगवान श्री नमिनाथ की आरती

तर्ज–माई रे माई.....

श्री नमिनाथ जिनेश्वर प्रभु की, आरति है सुखकारी।
भव दुःख हरती, सब सुख भरती, सदा सौख्य करतारी।।
प्रभू की जय .....।।टेक.।।

मिथिला नगरी धन्य हो गई, तुम सम सूर्य को पाके।
मात वप्पिला, विजय पिता, जन्मोत्सव खूब मनाते।।
इन्द्र जन्मकल्याण मनाने, स्वर्ग से आते भारी।
भव दुख.....।।प्रभू.....।।1।।

शुभ आषाढ़ वदी दशमी, सब परिग्रह प्रभु ने त्यागा।
नमः सिद्ध कह दीक्षा धारी, मन वैराग्य है त्यागा।।
ऐसे पूर्ण परिग्रह त्यागी, मुनि पद धोक हमारी।
भव दुख.....।।प्रभू.....।।2।।

मगशिर सुदि ग्यारस प्रभु के, केवलरवि प्रगट हुआ था।
समवसरण शुभ रचा सभी, दिव्यध्वनि पान किया था।।
हृदय सरोज खिले भक्तों के, मिली ज्ञान उजियारी।
भव दुख.....।।प्रभू.....।।3।।

तिथि वैशाख वदी चौदस, निर्वाण पधारे स्वामी।
श्री सम्मेदशिखर गिरि है, निर्वाणभूमि कल्याणी।।
उस पावन पवित्र तीरथ का, कण-कण है सुखकारी।
भव दुख.....।।प्रभू.....।।4।।

हे नमिनाथ जिनेश्वर तव, चरणाम्बुज में जो आते।
श्रद्धायुत हों ध्यान धरें, मनवांछित पदवी पाते।।
आश एक ''चंदनामती'' शिवपद पाऊँ अविकारी।
भव दुख.....।।प्रभू.....।।5।।

भगवान श्री मल्लिनाथ, नमिनाथ की जन्मभूमि

मिथिलापुरी तीर्थ की आरती

तर्ज–तुमसे लागी लगन.....

तीर्थ अर्चन करें, जो भी वन्दन करें, इसको ध्याएं।
आरती थाल हम लेके आए।।टेक.।।

जिस धरा पर जनमते हैं जिनवर।
तीर्थ वह ही कहाता है शुभतर।।
वन्दना तीर्थ की, वृद्धि निज कीर्ति की, हम कराएं।।
आरती थाल हम लेके आएं ।।1।।

मल्लिप्रभु-नमिप्रभू जन्मभूमी,
धन्य मिथिलापुरी की धरा थी।
जन्म उत्सव करें, फिर महोत्सव करें, इन्द्र आए।।
आरती थाल .....।।2।।

दोनों जिनवर के चार कल्याणक,
इस ही भू पर हुए तीर्थ पावन।।
आत्मचिंतन किया, मोक्षपद को लहा, सिद्धि पाए।
आरती थाल .....।।3।।

इस जनमभूमि की वंदना से।
आत्मशक्ती मिले अर्चना से।।
तीर्थभूमी नमें, जन्म सार्थक करें, प्रभु को ध्याएं।।
आरती थाल .....।।4।।

रत्नत्रय निधि की पूर्ती हो मेरी।
होवे भवसंतती खण्डना भी।।
''चंदनामति'' यही, आश करते सभी, मुक्ति पाएं।।
आरती थाल .....।।5।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-काली तेरी चोटी है.....

दुनिया में भगवन्तों की मूर्तियाँ अनेक हैं।
लेकिन ऋषभदेव की प्रतिमा केवल एक है।।
एक सौ आठ फुट के जिनवर को नमन,
ऋषभगिरि को नमन, मांगीतुंगी को नमन-2।।टेक.।।

एक बार ज्ञानमती माताजी के ध्यान में।
सन् उन्निस सौ छ्यानवे चातुर्मास काल में।।
शरदपूर्णिमा के दिन आया चिन्तन,
ऋषभगिरि को नमन, मांगीतुंगी को नमन।।1।।

वही प्रतिमा आज बनके पूर्ण हो गई है।
इन्तजार की घड़ी पूर्ण हो गई हैं।।
प्राण प्रतिष्ठा की घड़ी पास आ गई है।
संतों के संग आर्यिका मात आ गई हैं।।
सभी करें भक्ति से जिनवर को नमन।
ऋषभगिरि को नमन, मांगीतुंगी को नमन।।2।।

युग युग तक के लिए बन गई कहानी।
जैन संस्कृति की है यह अमिट निशानी।।
वीतराग छवि को देखो जाके पास में।
अहिंसा की गूंज उठी सारे आकाश में।।
''चन्दनामती'' यह भारत देश हुआ अब चमन।
ऋषभगिरि को नमन, मांगीतुंगी को नमन।।3।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज –श्री सिद्धचक्र का पाठ.....

गंधोदक का माहात्म्य, सुनो मन शांत भाव से प्राणी,
फल पायो मैना रानी।।टेक.।।
इक मैना का इतिहास सुना।
जिनधर्म कर्मसिद्धान्त सुना।।
श्री सिद्धचक्र का पाठ है उसकी निशानी, फल पायो मैना रानी।।1।।
दूजी इक मैना और हुई।
जो जिन भक्ती में प्रसिद्ध हुई।।
इस कन्या ने सम्यक्त्व की महिमा जानी, फल पायो मैना रानी।।2।।
है ग्राम टिकैतनगर सुन्दर।
मैना का जन्म हुआ जहाँ पर।।
मोहिनी व छोटेलाल की प्रथम निशानी, फल पायो मैना रानी।।3।।
इक बार महामारी फैली।
घर-घर में थी चेचक निकली।।
मैना के दो भ्राता की बनी कहानी, फल पायो मैना रानी।।4।।
फैली कुरीति थी नगरी में।
शीतला मात पूजन कर लें।।
ऐसी श्रद्धा करते थे सब अज्ञानी, फल पायो मैना रानी।।5।।
मैना जिनमत श्रद्धानी थी।
कर्मों की गति पहचानी थी।।
प्रभु शीतलनाथ की भक्ती उसने ठानी, फल पायो मैना रानी।।6।।
गंधोदक रोज लगा करके।
कर दिया स्वस्थ भ्राता अपने।।
पर कितनों की हो गई मृत्यु नहिं मानी, फल पायो मैना रानी।।7।।

यह चमत्कार देखा सबने।
तब जिनवर के दृढ़ भक्त बने।।
मिथ्यात्व दूर हो गया बने सब ज्ञानी, फल पायो मैना रानी।।8।।
यह मैना ही बनी ज्ञानमती।
जो बालयोगिनी प्रथम कही।।
इस युग की गणिनीप्रमुख आर्यिका मानी, फल पायो मैना रानी।।9।।
तुम भी दृढ़ श्रद्धानी बनना।
गंधोदक पर श्रद्धा रखना।।
'चन्दनामती' यह सच्ची कही कहानी, फल पायो मैना रानी।।10।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-महाकुंभ का पर्व महान.....

जिनमंदिर का निर्माण, करो सब मिलके करो।
करो सब मिलके करो, करो सब मिलके करो...,
इससे मिलता है पुण्य महान, करो सब मिल के करो।।टेक.।।

मंदिर में राजें जिनवर प्रतिमा, तीर्थंकर चौबीसों की महिमा।
चौबीसों प्रभू का गुणगान, करो सब मिलके करो।।जिन.।।1।।

मंदिर में बजते हैं घंटे झालर, जिनवर पे ढुरते हैं चौंसठ चामर।
प्रभु आरती का पुण्य महान, करो सब मिलके करो।।जिन.।।2।।

मंदिर व प्रतिमा निर्माण जैसा, दूजा न कोई है पुण्य वैसा।
धन बढ़ता है करने से दान, करो सब मिलके करो।।जिन.।।3।।

मंदिर में सोने की ईंट लगाओ, सोना ही सोना जीवन में पाओ।
अपनी आत्मा को स्वर्ण समान, करो सब मिलके करो।।जिन.।।4।।

मंदिर के दर्शन की कर लो प्रतिज्ञा, ''चन्दनामती'' सभी लेना ये शिक्षा।
सम्यग्दर्शन से आत्मा महान, करो सब मिलके करो।।जिन.।।5।।

गुरु मंगलाष्टक

(श्री वृन्दावन कवि विरचित)

संघ सहित श्री **कुंदकुंद** गुरु, वंदन हेतु गये गिरनार।
वाद पर्‌यो तहँ संशयमति सो, साक्षीवदी अंबिकाकार।।
सत्य पंथ निरग्रंथ दिगम्बर, कही सुरी तहँ प्रगट पुकार।
सो गुरुदेव बसो उर मेरे, विघन हरण मंगल करतार।।1।।

स्वामी **समंदभद्र** मुनिवर सो, शिवकोटी हठ कियो अपार।
वंदन करो शंभु पिंडी को, तब गुरु रच्यो स्वयंभू भार।।
वंदन करत पिंडिका में से, प्रगट भये जिन चंद्र उदार।
सो गुरुदेव बसो उर मेरे, विघन हरण मंगल करतार।।2।।

श्री **अकलंक देव** मुनिवर सो, वाद रच्यो जहँ परत विचार।
तारादेवी घट में थापी, पट के ओट करत उच्चार।।
जीत्यो स्याद्वाद बल मुनिवर, बौद्ध बोध तारा मदटार।
सो गुरुदेव बसो उर मेरे, विघन हरण मंगल करतार।।3।।

श्रीमत **विद्यानंदि** जबै, श्री देवागम थुति सुनी सुधार।
अर्थ हेतु पहुँच्यो जिनमंदिर, मिल्यो अर्थ तहँ सुख दातार।।
तब व्रत परम दिगम्बर को धर, परमत को कीनो परिहार।
सो गुरुदेव बसो उर मेरे, विघन हरण मंगल करतार।।4।।

श्रीमत **मानतुंग** मुनिवर पर, भूप कोप जब कियो गंवार।
बंद कियो ताले में तब ही, भक्तामर गुरु रच्यो उदार।।
चक्रेश्वरी प्रगट तब ह्वैके, बंधन काट कियो जयकार।
सो गुरुदेव बसो उर मेरे, विघन हरण मंगल करतार।।5।।

श्रीमत **वादिराज मुनिवर** सों, कह्यो कुष्ट भूपति जिहँबार।
श्रावक सेठ कह्यो तिहँ अवसर, मेरे गुरु कंचन तन धार।।

तब ही एकीभाव रच्यौ गुरु, तन सुवरणद्युति भयो अपार।
सो गुरुदेव बसो उर मेरे, विघन हरण मंगल करतार।।6।।

श्रीमद् **कुमुदचंद्र मुनिवर** सों, वाद पर्‌यो जहँ सभा मंझार।
तब ही श्री कल्याण धाम थुति, श्री गुरु रचना रची अपार।।
तब प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ की, प्रगट भई त्रिभुवन जयकार।
सो गुरुदेव बसो उर मेरे, विघन हरण मंगल करतार।।7।।

श्रीमत **अभयचंद्र** गुरु सो जब, दिल्लीपति इमि कही पुकार।
कै तुम मोहि दिखावहु अतिशय, कै पकरौ मेरो मतसार।।
तब गुरु प्रगट अलौकिक अतिशय, तुरत हर्‌यो ताको मदभार।
सो गुरुदेव बसो उर मेरे, विघन हरण मंगल करतार।।8।।

–दोहा–

विघन हरण मंगल करण, वांछित फल दातार।
'वृन्दावन' अष्टक रच्यो, करौ कंठ सुखकार।।